सूतक-पातक

सूतक : बच्चे के जन्म पर होने वाली अशुद्धि को सूतक कहते हैं। इसे सुआ भी कहते हैं।

पातक : जीव के मरण के पश्चात होने वाली अशुद्धि को पातक कहते हैं।

सूतक अथवा पातक में देव शास्त्र गुरु का पूजन, प्रक्षालादिक तथा मंदिर जी का जाजम वस्त्रादि को स्पर्श नहीं करना चाहिये। सूतक का समय पूर्ण हुए बाद पूजन आदि करके पात्र दान आदि करना चाहिए।

व्यवहार गत सूतक पातक
शुद्धि का काल प्रमाण

अवसर		जन्म	मरण	काल
एक माह का बालक	३ पीढ़ी तक	१० दिन	१२ दिन	१ दिन
दो माल का बालक	४ पीढ़ी तक	१० दिन	१० दिन	३ दिन
तीन माह तक का गर्भपात	५ पीढ़ी तक	६ दिन	६ दिन	३ दिन
इसके बाद जितने माह का गर्भपात	६ पीढ़ी तक	४ दिन	४ दिन	उतने दिन
प्रसूता के	८ पीढ़ी तक	१ दिन	१ दिन	४५ दिन
गृह त्यागी संयमी के	९ पीढ़ी तक	६ दिन	६ दिन	१ दिन
शव लेकर व साथ जाने वालो के		१ दिन	३ दिन	१ दिन
परदेश में मरने वालों का				

- प्रसूति स्त्री को ४० से ४५ दिन का सूतक होता है। प्रसूति स्थान एक माह तक अशुद्ध है।
- रजस्वला स्त्री चौथे दिन पति के भोजनादिक के लिये शुद्ध होती है। परन्तु देव दर्शन पूजन पात्र दान के लिये पांचवें दिन शुद्ध होती है।
- व्यभिचारिणी स्त्री के सदा ही सूतक रहता है।